हरियाणा करंट न्यूज

मासिक

★ अक्टूबर, 2012 ★ मूल्य: 10 रूपए ★ वार्षिक: 100 रूपए

कैथल के उपायुक्त चन्द्रशेखर की अनूठी पहल:

गांवों में रात्रि ठहराव कार्यक्रम

हरियाणा में पहली बार सामाजिक सारोकारों से अपने काम को जोड़कर करने की उपायुक्त चंद्र शेखर की पहल खासी चर्चित हो रही है। गांवों में रात्रि ठहराव का उनका कार्यक्रम अनूठा है। जिसकी शुरूआत पूण्डरी से हुई। शुरू में लोगों को इस कार्यक्रम के बारे में पता लगा तो ग्राम वासियों ने इस बात के लिए आश्चार्य व्यक्त किया कि क्या कोई उपायुक्त भी किसी गांव के स्कूल में ठहर सकता है। तीन जुलाई को पहली बार उपायुक्त चन्द्रशेखर, अतिरिक्त उपायुक्त दिनेश सिंह यादव के साथ गांव के राजकीय स्कूल में रात को रूके तो समस्त गांव वासी उनके रूकने के स्थान पर जमा हो गये। उपायुक्त को अपने बीच पाकर ग्राम वासियों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा।

- सुनील कौशिक

प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने गत जुलाई माह में चण्डीगढ में आयोजित उपायुक्तों एवं पुलिस अधीक्षकों की बैठक की अध्यक्षता करते हुए जनता एवं प्रशासन में विश्वास बढाने और इनके बीच की दूरी को कम करने के उद्देश्य से प्रति माह कम से कम एक गांव में रात्रि ठहराव कार्यक्रम आयोजित करने के दिशा-निर्देश दिए थे। उपायुक्त कैथल ने सर्वप्रथम न केवल इन दिशा-निर्देशों का अमलीजामा पहनाया बल्कि एक कदम आगे बढाते हुए प्रतिमाह दो रात्रि ठहराव कार्यक्रम आयोजित करने का भी एक क्रांतिकारी फैसला किया।

धीरे-धीरे यह कार्यक्रम लोक प्रिय होता चला गया तथा राष्ट्रीय, अंर्तराष्ट्रीय स्तर

के समाचार पत्रों व पत्रिकाओं की सुर्खियां बना। अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका ब्यूरोक्रेसी टुडे ने श्री चंद्रशेखर को अगस्त माह का ब्यूरोक्रैट चुना एवं रात्रि ठहराव कार्यक्रम के साथ-साथ उपायुक्त द्वारा शुरू किए गए अन्य कार्यक्रमों की भी विशेष प्रशंसा की। इन रात्रि ठहराव कार्यक्रमों के कारण प्रशासन व जनता के बीच की दूरी खत्म होने के साथ-साथ लोगों के ऐसे काम हुए हैं, जिनके लिए वे कई-कई महीनों से सरकारी कार्यालयों के चक्कर काट रहे थे।

इन कार्यक्रमों में उपायुक्त चन्द्रशेखर ने तीन बातों पर जोर दिया, जिनमें अधिकारियों की उपस्थिति, काम के प्रति जिम्मेदारी तथा विश्वसनीयता शामिल है। उपायुक्त के इन प्रयासों से आम आदमी का विश्वास कायम हुआ है कि बिना भागदौड़ के भी सरकारी कार्यालयों में काम आसानी से हो सकता है। इसके अतिरिक्त इन रात्रि ठहराव कार्यक्रम में समाज के ज्वलंत मुद्दों को भी उठाया गया, जिनमें लड़कियों की शिक्षा, कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम, स्कूल छोड़ने वाले बच्चों को स्कूल से जोड़ना तथा

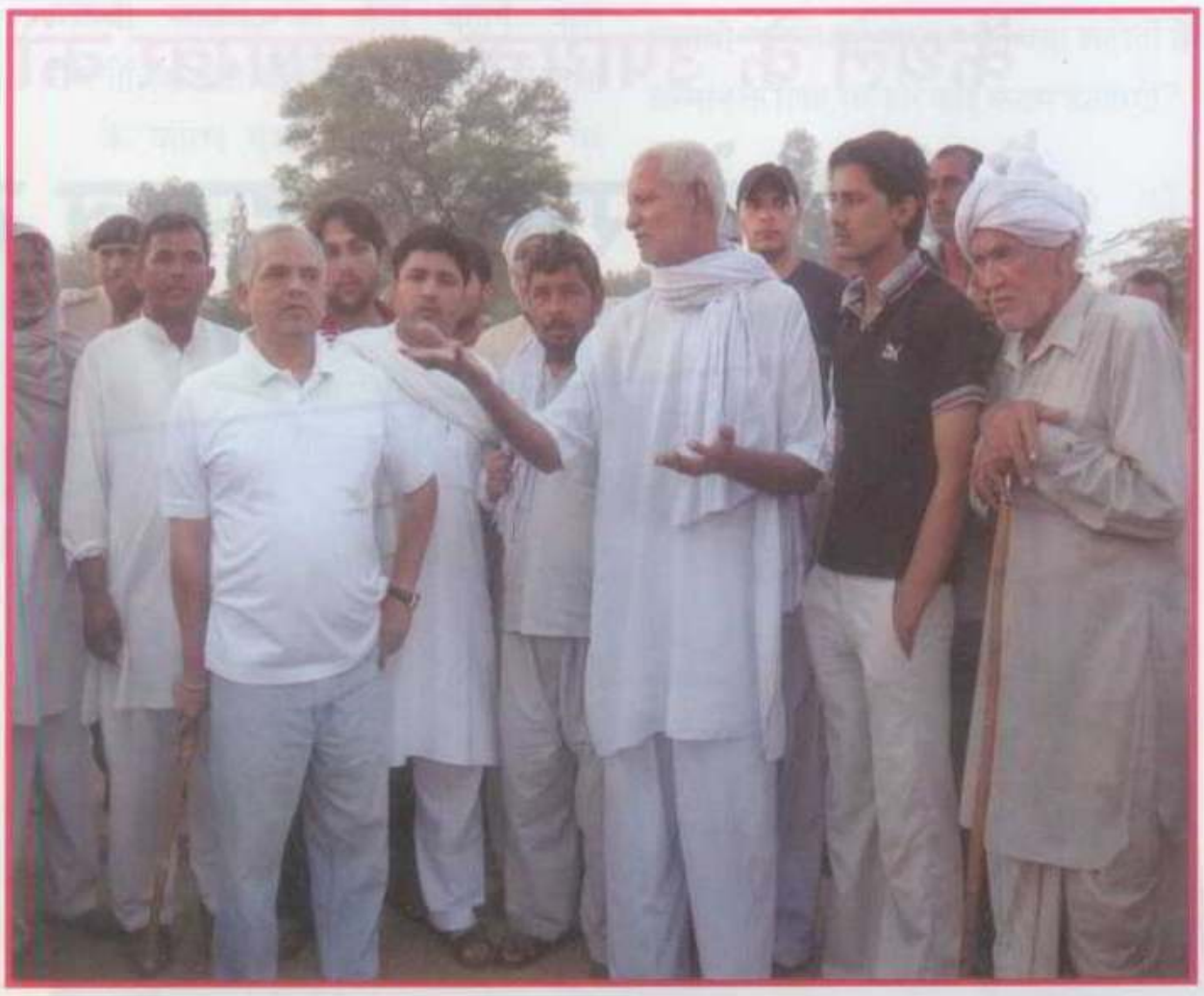

गर्भवती महिलाओं के लिए संस्थागत प्रसव कितना महत्वपूर्ण है तथा स्वास्थ्य विभाग की इन महिलाओं के लिए कौन से राहत योजनाएं हैं। नि:संदेह प्रशासनिक अधिकारियों के रात्रि ठहराव कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकारियों के प्रति विश्वास को कायम रखने में सफल सिद्ध हुए हैं।

उपायुक्त से रात्रि ठहराव में पहले गांव की तरफ से बुजुर्ग, महिलाएं व युवा वर्ग अपनी-अपनी समस्याओं को लेकर मिले। उपायुक्त ने मौके पर ही प्रशासनिक अधिकारियों को इन समस्याओं के समाधान के लिए जरूरी दिशा निर्देश भी दिए। आहूं के बाद कैथल खण्ड के बुढाखेड़ा, गुहला खण्ड के अजीमगढ़, राजौंद खण्ड के संतोख माजरा में रात्रि ठहराव कार्यक्रम के तहत

“अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका ब्यूरोक्रेसी टुडे ने श्री चंद्रशेखर को अगस्त माह का ब्यूरोक्रैट चुना एवं रात्रि ठहराव कार्यक्रम के साथ-साथ उपायुक्त द्वारा शुरू किए गए अन्य कार्यक्रमों की भी विशेष प्रशंसा की। इन रात्रि ठहराव कार्यक्रमों के कारण प्रशासन व जनता के बीच की दूरी खत्म होने के साथ-साथ लोगों के ऐसे काम हुए हैं, जिनके लिए वे कई-कई महीनों से सरकारी कार्यालयों के चक्कर काट रहे थे।”

उपायुक्त चन्द्रशेखर सभी प्रशासनिक अधिकारियों के साथ गांवों के सरकारी स्कूलों में ठहरे। इस रात्रि ठहराव कार्यक्रम की विशेष बात यह रही कि गांव के वर्षों पुराने मामले इस कार्यक्रम के होने के कारण निपटाए जा सके। गांव अजीमगढ़ में स्कूल भवन के ऊपर से हाईवोल्टेज तार हटवाने के लिए ग्रामवासी व पंचायत कई वर्षों से प्रयास कर रहे थे, लेकिन उनके प्रयास सफल नहीं हो पा रहे थे। उपायुक्त चन्द्रशेखर का ज्यों ही इस गांव के लिए रात्रि ठहराव कार्यक्रम बना तो बिजली विभाग ने इन बिजली की तारों को तुरन्त हटा दिया।

इसी प्रकार इंदिरा प्रिय दर्शनी विवाह शुगन योजना के 201 0 से मामले जिला में लम्बित थे। उपायुक्त ने व्यक्तिगत रूचि लेकर इन मामलों को निपटाने के लिए विशेष अभियान परिवारों को सवा दो करोड़ रूपये की राशि का वितरण किया जा सका। इसके अतिरिक्त इंदिरा आवास योजना व हरियाणा अनुसूचित जाति व वित्त निगम द्वारा गरीब परिवारों को मौके पर ही ऋण के आवेदन स्वीकृत किए गए। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य, कृषि, जन स्वास्थ्य, जिला विधिक सेवाए प्राधिकरण, खाद्य आपूर्ति, राजस्व, जिला समाज कल्याण, जिला कल्याण विभाग जैसे विभागों ने मौके पर ही अपने-अपने विभाग से संबंधित मामले निपटाए तो लोगों ने राहत महसूस की।

महावीर सिंह
सरपंच, बूढ़ाखेड़ा

मौके पर समस्याओं को आसानी से समझ पाते हैं अधिकारी

बूढ़ाखेड़ा के सरपंच महावीर सिंह का कहना है कि मौके पर समस्याओं को आसानी से समझ पाते हैं अधिकारी। उनका कहना है कि जब गांव में डीसी साहब के नाइट स्टे का प्रोग्राम बना तो ग्रामीणों को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि डीसी साहब गांव की साधारण व्यवस्था में रात्रि ठहराव करेंगे। कार्यक्रम में दिनभर चले मेडीकल कैंप का ग्रामीणों ने लाभ उठाया। कृषि के बारे में नई तकनीक और सरकारी योजनाओं की जानकारी ग्रामीणों को मिली। ग्रामीणों की छोटी-मोटी समस्याएं गांव में ही निपट गईं और उन्हें कैथल नहीं जाना पड़ा। गांव के गंदे जोहड़ को पटवाकर पार्क बनवाने का निर्णय डीसी साहब ने लिया। जिस पर कार्यवाही शुरू हो गई है। सबसे बड़ी समस्या थी परिवहन की। गांव से 17 किमी कैथल पढ़नें जाने में गांव की लड़कियों को भारी समस्या आ रही थी। दस साल से परिवहन का साधन नहीं था। गांव का स्कूल दसवीं तक है। लड़कियों को आगे पढ़ने के लिए शहर जाना मजबूरी थी। उपायुक्त ने गांव से रोडवेज बस सुविधा शुरू करने की घोषणा की जो अगले दिन से ही चालू हो गई।

लोगों के बीच जाकर अच्छा लगता है-चंद्रशेखर

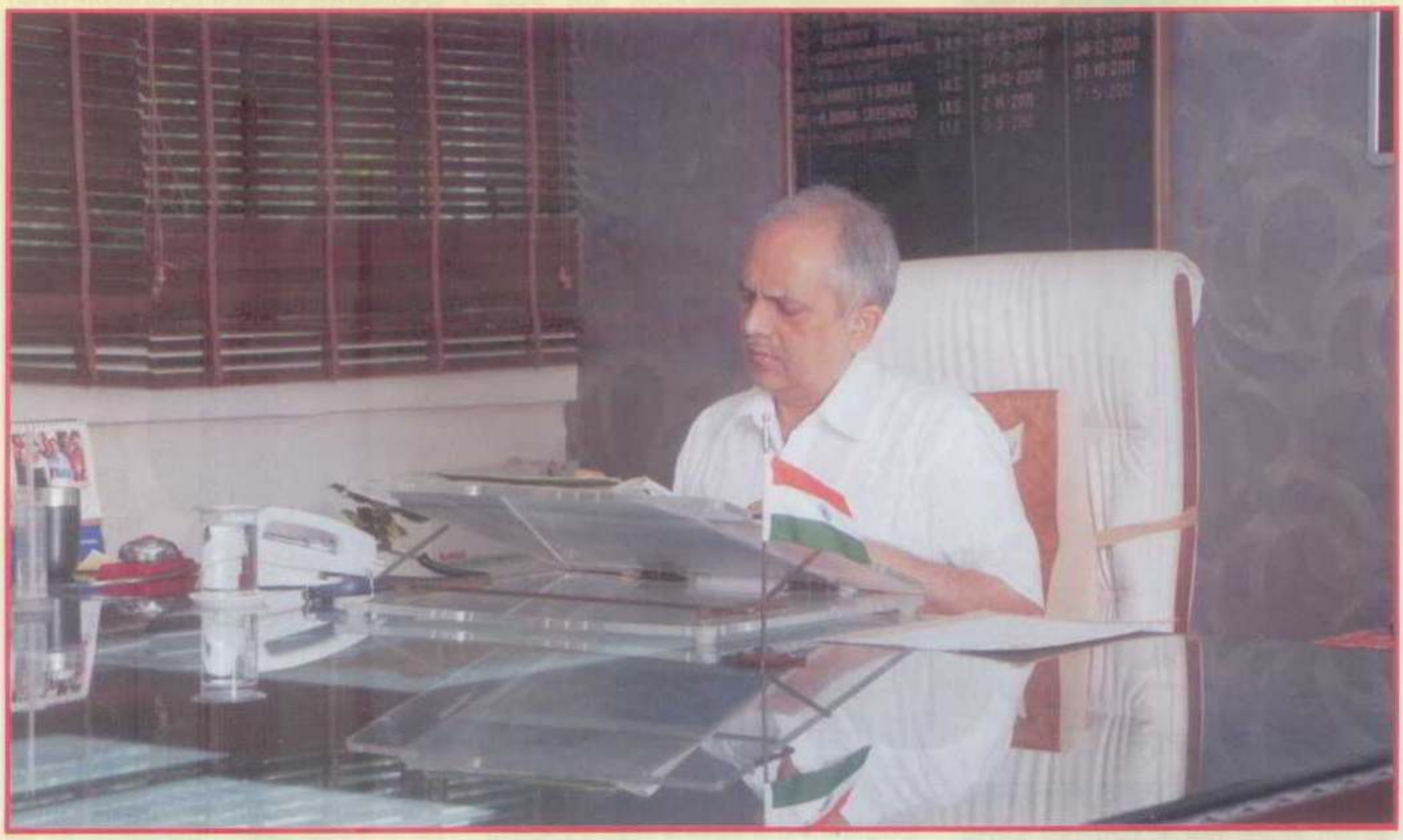

कैथल के जिला उपायुक्त चंद्रशेखर गांवों में रात्रि ठहराव कार्यक्रम की अपनी पहल से स्वयं भी बहुत उत्साहित हैं। हरियाणा करंट न्यूज से अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम से ग्रामीणों को तो लाभ हो ही रहा, उन्हें भी कैथल आने वाली ग्रामीणों की भीड़ से राहत मिली है। वे मानते हैं कि इससे जिला प्रशासन में भी चुस्ती आई है। इंदिरा गांधी शगुन योजना के अनेक लाभपात्र दो साल से कार्यालय के चक्कर काट रहे थे। अब जिस खंड में रात्रि ठहराव कार्यक्रम होता है, वहां खंड के सारे चैक वितरित करते हैं। हर पंद्रह दिन बाद क्रमवार एक खंड में ये कार्यक्रम होता है। यानि अधिकतम तीन माह में लाभपात्रों को निश्चित रूप से चैक मिल जाता है। उपायुक्त बताते हैं कि गांवों में अतिक्रमण एक बड़ी समस्या है। इन कार्यक्रमों में गांववालों ने स्वयं ही अतिक्रमण हटाकर एक अच्छी मिसाल कायम की हैं। इसके अलावा वे ग्रामीणों को बिजलीचोरी छोड़ने के लिए भी प्रेरित करते हैं। गांववालों को समझाते हैं कि सम्मान से जिएं और बिजली चोरी न करें। इसका भी अच्छा प्रभाव पड़ा है और गांव वाले मौके पर कनेकशन ले रहे हैं। गांव की गली, जोहड़ या अन्य समस्यायें मौके पर देखकर उनका समाधान सही और जल्द हो जाता है। वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन जैसी व्यक्तिगत समस्याओं का हल भी मौके पर होने से ग्रामीणों को बड़ी राहत मिली है। इसके अलावा ग्रामीणों को कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराइयों के बारे में भी बताया जाता है। सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया जाता है। सबसे अहम बात तो ये है कि सहज वातावरण में ग्रामीण अपनी बात स्वयं जिला उपायुक्त से कह पाते हैं। इससे कलेक्टर साहब और आम जनता के बीच सीधा संवाद होता है और जनता-प्रशासन के बीच की दूरीयां कम होती है। आईएएस अधिकारी की इस अनूठी पहल ने अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी चर्चा पाई है और उपायुक्त चंद्रशेखर को अगस्त माह में ब्यूरोक्रेटस ऑफ दी मंथ सम्मान से नवाजा गया है।

“ इस कार्यक्रम से ग्रामीणों को तो लाभ हो ही रहा, उन्हें भी कैथल आने वाली ग्रामीणों की भीड़ से राहत मिली है। वे मानते हैं कि इससे जिला प्रशासन में भी चुस्ती आई है। ”